राज
कॉमिक्स विशेषांक
संख्या 75
स्नेकपार्क
नागराज
एक ट्रेडिंग कार्ड मुफ्त
NAGRAJ YEAR
1996

स्नेकपार्क

महानगर का यह सामान्य सा दिखने वाला एक बंगला, वास्तव में एक किले से भी ज़्यादा मज़बूत और अभेद्य है। और इसके मालिक का नाम है, नागराज उर्फ...
...राज! तुम समझते क्यों नहीं?
मेरा ऑफिस जाने का कोई फायदा नहीं है!...
...जब तक दादा वेदाचार्य का कोई पता नहीं मिलता, तब तक मेरा किसी काम में दिल नहीं लगेगा। आज उनको बिना बताए हुए आठ दिन हो गए हैं। ऐसा उन्होंने नहीं किया।
विषकन्या और विषंधर से उलझने के चक्कर में मैं भी इस बात पर ध्यान नहीं दे पाया...
...लेकिन तुम फिक्र मत करो। अगर वे अपने-आप कहीं गए तो जल्दी ही वापस आ जाएंगे...
...और अगर किसी ने उनको जबरदस्ती ले जाने की कोशिश की है...
...तो नागराज आज ही रात उस शख्स का पता लगाकर रहेगा!
एक बार नागराज के लिए, उसके परिवार के राजज्योतिषि रह चुके वेदाचार्य की जान बेशकीमती थी...

तो किसी और के लिए नागराज की जान-
देखो ! इस सांप की आंखों में ध्यान से देखो !...
अब तुम सब-कुछ भूल चुके ... तुम्हारा दिमाग पूरी तरह से मेरे कब्जे में है।
हां !
अब तुम वही करोगे जो मैं कहूंगा। कल सुबह तुम नागराज से मिलोगे, उसको काटोगे...
... और तब तक मरने से पहले उसका जितना खून पी सकते हो पियोगे। पूछो नागराज कहां मिलेगा ?
नागराज मुझे कहां मिलेगा ?
महानगर में सर्पों का एक सुरक्षित के बनाया गया है। वहां पर सांपों को के प्राकृतिक वातावरण में पाला जाएगा...
... ताकि फिर उनका जहर निकालकर से सांप के काटे की दवा बनाई जा सके।...
... कल सुबह नागराज पार्क का उद्घाटन करेगा। र उस पार्क का नाम है...
...स्नेक पार्क।

नागराज पर कहीं और भी घात लगाई जा रही थी–
यही है वह निवास स्थान, जहां पर नागराज के मिलने की संभावना है।
लेकिन मुझे इसके अंदर चोरों की तरह प्रवेश करना पड़ेगा। क्योंकि मैं नहीं चाहती कि नागराज से मेरा सामना होते हुए कोई और भी देखे।...
... ये न तो नागराज के लिए अच्छा होगा, न ही मेरे लिए।
यह निवास स्थान वेदाचार्य ने राज के लिए बनवाया था। एक किले की तरह सुरक्षित। कई तरह के सुरक्षा तंत्रों से लैस–
ताकि अगर कोई दुश्मन, यह रहस्य जानकर कि नागराज ही राज है, इस मकान में घुसने की चेष्टा करे तो कभी सफल न हो पाए–
आहह!
चुभ
उस रहस्यमय लड़की के पैर में कांटा चुभने के साथ-साथ ही...
... अन्दर कहीं अलार्म बज उठा–
ये दादा वेदाचार्य अचानक चले क्यों...
–अरे! यह अलार्म!
भारती ने तुरन्त 'कंट्रोल रूम' में पहुंचकर 'क्लोज सर्किट टी॰वी॰ सिस्टम' चालू कर दिया–
अच्छा! तो घुसपैठिया एक लड़की लेकिन इसके पैर में चुभे कांटे एक विष से बुझे हुए हैं, जो किसी भी को कुछ समय के लिए लकवाग्रस्त सकता है!...

लेकिन भारती की यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी—
—क्योंकि न जाने क्यों उस लड़की पर विष का ज़रा सा भी असर नहीं हुआ था—
लोहे के कांटों की चुभन ने मुझे चौंका ही दिया था। गनीमत की बात है कि मैं तुरन्त संभलकर अंदर ही गिरी।
मेरे चढ़ते ही ये कांटे सक्रिय हो गए थे। यानी यह किसी सुरक्षा प्रबंध का हिस्सा है—मुझे सतर्क रहना होगा।
भारती की बुद्धि भी चकराकर रह गई—
अरे! इस पर विष का कोई असर नहीं हुआ। पर कैसे? यह कोई मामूली दुश्मन नहीं है। इसके लिए मुझे खास इंतजाम करना होगा।
कम्प्यूटराइज्ड' प्रणाली पर भारती के हाथ थिरकने लगे—
और एक नई सुरक्षा व्यवस्था ने बंगले की शक्ल बदलकर रख दी—
दीवार के हिस्सों ने झुककर असली दरवाजों को बंद कर दिया, और नए द्वार नज़र आने लगे—
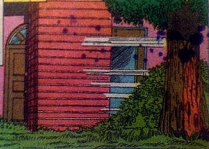
उस रहस्यमय लड़की को इस बदलाव का पता नहीं चला-
वह नस बने एक दरवाजे से अन्दर प्रविष्ट हुई-
जो कि उस रास्ते पर खुलता था, जिस पर दुश्मन
फंसाने के कई जाल बिछे हुए थे-
ये चक्र एकाएक घूमने लगा। और इसमें कई रंग-बिरंगी लाइटें एक क्रमबद्ध तरीके से जलने-बुझने लगी हैं।
'सम्मोहन चक्र'! दादा वेदाचार्य का बनाया हुआ यह यंत्र किसी भी प्राणी को पलभर में सम्मोहित कर सकता है।
अब तुम सम्मोहित हो चुकी हो। वहीं पर रुक जाओ!...
...और फिर मुझे अपना
और अपने आने का
बताओ!
बता... ओह!
मुझे सम्मोहित करने की कोशिश की जा रही है! मुझे!...
कड़क
...और वह भी इस खिलौने से!

भारती की आंखें आश्चर्य से फटी की फटी रह गईं–
ओह! दूसरा वार भी असफल हो गया। अब मुझे इस पर वह वार करना होगा, जो इसके लिए जान लेवा साबित हो सकता है।
पर मैं भी मजबूर हूं। यह लड़की काफी खतरनाक लग रही है। मैं इसको यहां तक आने नहीं दे सकती!
वह खतरनाक लड़की जिससे मिलने के लिए अन्दर घुस रही थी...
...वह इस वक्त अपने घर से काफी दूर था–
यह इक्कीसवां गुंडा है, जिससे मैंने वेदाचार्य के बारे में पूछा है।...
...लेकिन अब तक उस हुलिए के आदमी को किसी ने नहीं देखा है। अब समुद्र तट पर घूमने वाले गुंडों से पूछताछ की जाए।...
...शायद उनको ही कुछ पता हो!
नागराज!
आहह!

कुछ ही पलों बाद, नाग-बंधनों में लिपटा वह बूढ़ा थर-थर कांप रहा था–

मु... मुझे पुलिस के हवाले कर दो। जेल में डाल दो। पर... पर इन सांपों को मुझ पर से हटा लो!

हटा लूंगा। अगर तुम मेरे सवाल का सही-सही जवाब दे दोगे तो!

नागराज का सवाल सुनते ही वह बूढ़ा बिना वक्त खोए चालू हो गया–

तुम्हारे बताए हुलिए का आदमी, कुछ दिन पहले ईरान जाने वाले एक जहाज पर चढ़ा था। अब वह बूढ़ा कहां गया, यह तो के वापस आने पर ही मालूम होगा। और के आने में अभी एक महीना और है।

?

ओह! यानी एक महीने तक कुछ पता नहीं चलेगा?... चलेगा! मैं कल शिपिंग कारपोरेशन जाकर उस जहाज को ढूंढकर उससे 'रेडियो-संपर्क' करने की कोशिश करूंगा।

इधर नागराज की वेदाचार्य तक पहुंचने की कोशिशें जारी थीं...

न्दर घुसते ही 'लिफ्ट' का दरवाजा बहुत तेजी से बन्द हो गया-
ओह! यह क्या? इस 'लिफ्ट' की दीवारें चारों तरफ से मेरी तरफ सरक रही हैं...
—कक्ष छोटा हो रहा है। जरूर मेरी हर गतिविधि पर नजर रखी जा रही है। पर कहां से?
और दरवाजे के बन्द होते ही—
ओह! छत के इस छेद में एक शीशा चमकता नजर आ रहा है। हो न हो, यही वस्तु मुझ पर नजर रखने में सहायता कर रही है।...
उंगली के एक तेज वार से पहले छेद में छिपे कैमरे का लैंस तोड़ा...
और फिर एक झटके से पूरे कैमरे को ही छेद बाहर खींच लिया—
भारती को उस कैमरे से कुछ भी दिखना बन्द हो गया—
ओह! उसने लिफ्ट के अन्दर लगा कैमरा नष्ट कर दिया है। लेकिन बाहर लगे कैमरे में साफ

मुझे उस लड़की के लिफ्ट में पिसकर मर जाने का बहुत अफसोस है। लेकिन शायद उसका मर जाना अच्छा ही हुआ...
...क्योंकि जिस लड़की पर विषबुझे कांटें और सम्मोहन चक्र का भी असर नहीं हुआ, वह अवश्य ही कोई खतरनाक दुश्मन रही होगी।...
...नागराज आए तो इस लड़की का हुलिया बताकर उससे पूछूंगी...
...अरे! यह नागिन अन्दर कैसे आ गई?
लेकिन अगर अन्दर आ ही गई है, तो वापस नहीं जाने दूंगी मैं इसे!
भारती ने लपककर नागिन को दबोच लि
लेकिन अगले ही पल उसे नागिन को छोड़ देने के लिए मजबूर हो जाना पड़ा—
क्योंकि नागिन ने उसकी कलाई को अपनी कुंडली में जकड़ लिया था—
और फिर— भारती की आंखों ने एक आश्चर्यजनक दृश्य देखा—

तु… तुम उस 'लिफ्ट' से बच कैसे गई?
जब मैंने तुम्हारा कैमरा छत से बाहर खींचा, तो वहां पर एक छेद हो गया था। मैं उसी छेद से नागिन के रूप में बाहर आ गई।
तुम आखिर हो कौन?
तुम्हारे लिए यह जानना जरूरी नहीं है। लेकिन मेरे लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि नागराज कहां है? बताओ, कहां है वह?
नागराज! यह कैसे जानती है कि ये नागराज का घर है?…
…नागराज!…ये…ये तो मिस्टर राज का घर है। यहां पर तो कोई नागराज नहीं रहता!
कमाल है! उसने पता तो यहीं का बताया था!
किसने बताया था?
सुनो लड़की! अगर तू जानती है तो नागराज का पता बता दे। वर्ना नागराज के कफन-दफन की तैयारी कर ले!
अगर दुबारा नागराज के लिए ऐसे शब्द मुंह से निकाले, तो तेरे जहर के दांत तोड़ दूंगी।
ओह! यानी तू नागराज को जानती है! तेरी इस हरकत ने मुझे इस बात का सबूत दे दिया है।
ताड़…!!!

मेरे पास वक्त नहीं है, लड़की! अगर तूने पांच पलों के अन्दर-अन्दर नागराज का पता नहीं बताया, तो मैं तेरी आत्मा को नर्क का पता बता दूंगी।
ओह! अगर इसने मुझे अपने विषदंश से मार दिया तो नागराज को इससे सावधान करने वाला कोई नहीं बचेगा!
फिलहाल इससे छुटकारा पाने के लिए मुझे इसको कोई न कोई जवाब देना ही पड़ेगा।...
...ना... नागराज कल सुबह महानगर के स्नेक पार्क का उद्घाटन करेगा।
कहां पर है स्नेक पार्क?
ठीक है! बाकी मैं खुद पता कर लूंगी!
अगली सुबह स्नेक पार्क पहुंचने के लिए---
स्नेक पार्क - आम जनता के लिए एक खौफ भरे कौतुहल की चीज...
...और
इस पार्क का मुख्य उद्देश्य तो सांपों के विष यानी 'वेनम' को निकालकर उससे 'एंटीवेनम' यानी सर्प विष के काट को तैयार करना है...
...लेकिन इसके साथ-साथ
आप जितना सोचने वाले लोग बहुत कम हैं।
स्नेक पार्क
ENTRY
SNAKE PARK

हमारे देश में सांप के काटने से हर वर्ष लगभग 40,000 मौतें होती हैं। इनमें से उन लोगों की संख्या भी अच्छी-खासी है, जो सर्प के विष की बजाए सांप के डर से मर जाते हैं।...
...जबकि सच्चाई तो यह है कि हर दस सांपों में से सिर्फ एक सांप ही जहरीला होता है। यानी सिर्फ दस प्रतिशत। इस पार्क का उद्देश्य जनता को विषधर और विषहीन सांपों के अंतर से अवगत कराना है।...
...और इस महान उद्देश्य के लिए बनाए गए इस स्नेक पार्क के उद्घाटन के लिए, तुमसे अच्छा व्यक्ति तो मेरी नजर में नहीं है...
...रिबन काटो नागराज!
तड़ तड़ तड़ तड़ तड़
नागराज के रिबन काटते ही तालियों की गड़गड़ाहट से वातावरण गूंज उठा-
और स्नेक पार्क के अंदर दर्शकों की भीड़ पानी के रेले की तरह दाखिल हो गई-
दर्शकों के लिए जाली के इस पार आना प्रतिबंधित रखा गया है, ताकि उनके जीवन को इन सांपों से कोई खतरा न रहे।
मम्मी! देखो, नागराज!

और इसी वक्त- वी.आई.पी. दर्शकों के लिए सुरक्षित प्रवेश द्वार पर-
अगर आपके पास, 'स्पेशल पास' नहीं है तो आप इस द्वार से नहीं आ सकते!
हट जाओ मेरे रास्ते से!
हट जाओ!
ताड़
उस पागल हुए आदमी में न जाने कहां से इतनी ताकत
कि उसने दोनों गार्डों को एक ही वार में चित्त कर दिया-
यह दृश्य देखकर कोई मुस्करा उठा-
मेरे 'हिप्नोटिक कंट्रोल' में फंसा यह आदमी जब तक मेरा आदेश पूरा नहीं कर लेगा तब तक कोई इसको रोक नहीं पाएगा!
गार्डों की चीख नागराज के संवेदनशील कानों तक भी पहुंच गई थी-
और जब तक नागराज कुछ
तब तक उस आदमी के दांत
में धंस चुके थे-
अरे! अरे! यह तो मेरा खून पी रहा है!
यह आवाज कैसी थी?
इधर से कोई आदमी भागता हुआ इधर ही आ रहा है!

वराज ने उस विक्षिप्त व्यक्ति को अपने
रीर से दूर हटाने की पूरी कोशिश की-
चीप चीप चीप
?
साथ ही साथ उसका शरीर भी चलना शुरू हो गया-
ओ माई गॉड! ओ माई गॉड! कोई अस्पताल को फोन करो! -
--एंबुलेंस बुलाओ!
लेकिन एंबुलेंस को बुलाने की जरूरत नहीं पड़ी-
क्योंकि तभी एंबुलेंस की आवाज वातावरण में गूंज उठी-
भीड़ को चीरती हुई एंबुलेंस वहां पर आकर रुकी, और उसमें से एक आदमी कूद कर उतरा-
कहां है? कहां पर है, घायल!
हीं हीं हीं हीं हीं हीं हीं हीं हीं
उधर!
लेकिन जोंक की तरह चिपटा वह आदमी नागराज से
नहीं हटा अब उसके प्राण उसके शरीर से दूर हो गए-
कहीं आदमी?
र कोई नहीं
आया?
मैं ड्यूटी पर नहीं हूं। मैं तो सिर्फ यहां से गुजर रहा था कि भीड़ देखकर रुक गया। मुझे लगा कोई दुर्घटना हो गई है।

मैं अभी इस आदमी को अस्पताल ले जाता हूं।
बड़े आश्चर्य की बात है। इस आदमी की ऐसी हालत देखकर भी ये एंबुलेंस वाला बिल्कुल नहीं चौंका। सामान्य सा व्यवहार कर रहा है। जैसे ऐसी लाशें रोज़ ही देखता हो।
मैं तो इसको ले जाकर ही रहूंगा। हटो मेरे रास्ते से!
एक मिनट दोस्त! इसको अस्पताल ले जाने की कोई ज़रूरत नहीं है।
...इसीलिए मैं इसको जाने नहीं दे सकता!
घड़ाक
और नागराज उसको संभालने का मौका देने वाला नहीं था-
लेकिन तभी- उसकी नज़र भीड़ की तरफ गई, और एक तूफान ने उसका ध्यान बंटा दिया-
ENTRY PROHIBITED

अगर तू लड़ाई चाहता है नागराज, तो ये ही सही!...
धाड़
...वैसे भी दुश्मन से एक बार सामना हो जाने के बाद...
नागराज की पलकर के लिए स्तब्ध रह गया। और फिर उसकी पसलियां कड़कड़ा उठीं–
ओह! यह तो आदमी की खाल पहने हुए एक विलक्षण सर्प है।
र्पजनक था वह प्राणी।
अंधेरा छा गया–

लेकिन नागराज के दृढ़ निश्चय ने उसके शरीर को एक बार फिर उसके पैरों पर खड़ा कर दिया–
सांप की सबसे कमजोर चीज होती है, उसकी रीढ़ की कमजोर हड्डी...
...इसीलिए अगर सांप को दुम से पकड़कर हवा में उठा लिया जाए... तो वह अपना मुंह ऊपर नहीं उठा पाता। पूरी तरह से बेबस हो जाता है...
...मुझे यह लड़ाई जीतने के लिए इसको दुम से पकड़कर वार करना होगा!
नागराज ने सोचा भी ठीक था, और वार भी ठीक ही किया था–
परन्तु वह यह भूल गया था कि केंचु सर्प के शरीर में चार पैर भी थे...
...जिनका इस्तेमाल केंचु सर्प, नागराज को बेबस करने में कर सकता था–
नागराज कमजोर पड़ रहा है, आशीष, रेखा, निशांत, मयंक कुणाल!
हम भारत के विभिन्न राज्यों से नागराज को उद्घाटन करता देखने आए थे, न कि पिटता हुआ देखने!
अगर मैं नागराज की मदद कर सकता तो जान देकर भी करता लेकिन फिलहाल हम कुछ नहीं कर सकते!
न तो नागराज के
दृश्य सहन कर पा रहे

और न ही नागराज का शरीर केंचु
र्प के मशीनी शरीर के वार–
ह! इस सर्प को निर्मित
ने वाला अवश्य ही बहुत
तिभाशाली वैज्ञानिक होगा...
क्योंकि इसका निर्माण ही
के मात देने के लिए किया गया है।
स मशीनी शरीर पर न तो मेरी सर्प
ा का असर होगा, न ही विष-
कार का। और न ही मेरे
विषदंश का!...
तड़ाक
...इसको तो मैं सम्मोहित भी नहीं कर सकता, क्योंकि इसकी आंखें ही नहीं हैं...
...एक मिनट! फिर यह देख कैसे पा रहा है? ओह! यह अपनी जीभ बाहर लपलपा रहा है!...
...कई सर्प आंखों से कम दिखने के कारण अपनी चिरी हुई जीभ का इस्तेमाल करते हैं। अपने शिकार की गंध और कंपन को उनकी जीभ ग्रहण करती है और इससे वे अपने शिकार की स्थिति का पता लगा लेते हैं।
यह भी वही कर रहा है। अब मैं इसको गूंगों के साथ-साथ अंधा भी कर देता हूं।
नागराज ने एक झटके के साथ केंचु सर्प की जीभ बाहर खींच ली–

कराह उठा-
न मिल पाने के कारण केंचु सर्प छटपटाने और बेचैन होने लगा-
करके, स्नेक पार्क की चीजों को तोड़ रहा है...
...कि मैं इसके बदन को ही...
...तोड़ दूं!
केंचु सर्प का शरीर
लगे-
धाड़
और साथ ही साथ किसी
आशाएं भी कड़कड़ा उठीं-
केंचु सर्प नागराज को नहीं हरा पाएगा। अब एक ही रास्ता है-
हुआ है,
को उठा लाऊं
22

र- नागराज ने केंचु सर्प को आखिरी बार झटका-
अलग हो गया धड़ से इसका मशीनी शरीर!
खत्म हो गया केंचु सर्प।
कड़ाक
ब मुझे इसकी दुम कड़े रहने की कोई रूरत नहीं है।
नागराज ने दुम को छोड़ दिया। और यहीं पर वह एक भीषण गलती कर गया-
भूल गया था कि
सर्पों के शरीर से जान निकल जाने के बाद भी...
... उनकी दुमें काफी देर तक तड़पती रहती हैं-
नागराज की कनपटी पर केंचु सर्प की तड़पती पूंछ का एक तेज वार हुआ-
तड़ाक
आह!
र नागराज की कनपटियों के ठीक नीचे स्थित, उसकी
'फुंकार ग्रंथि' का संतुलन बिगड़ गया-
ओह! मेरे मुंह से अपने-आप विष फुंकार निकल रही है। मैं इसको रोक नहीं पा रहा हूं... मेरी कनपटी में भी ज दर्द हो गया है।... और इस कारण कुछ भी ठीक से सोच-समझ नहीं पा रहा हूं।

नागराज के पास पड़ी लाश को उठाने के लिए, उस रहस्यमय व्यक्ति के बढ़ते कदम वहीं पर रुक कर रह गए-
ओफ! ये विष फुंकार! अगर मैं और आगे बढ़ा तो यहीं पर बेहोश होकर गिर जाऊंगा...
...उधर वह लड़की भी नागराज की तरफ बढ़ने की कोशिश कर रही है। पर... पर यह क्या?...
...ये तो एक इच्छाधारी नागिन है!
उस रहस्यमय शख्स की अनुभवी आंखों से विसर्पी बच नहीं सकी थी-
जोश में आकर, जोर से बोले गए उसके शब्दों को भीड़ के कोलाहल के कारण और कोई तो नहीं सुन पाया, लेकिन विसर्पी के कान ज्यादा तेज थे-
ओह! ये आदमी जो कोई भी है, इसने मुझे पहचान लिया है। अब मेरा यहां पर रुकना खतरे से खाली नहीं है।...
...वैसे भी विष फुं इस घने कोहरे को कर नागराज तक पा पाना असंभव है।...
मुझे यहां से भागना होगा।
विष फुंकार से अपनी जान बचाने के भागती भीड़ में, कोई नहीं देख पाय
...कि कब विसर्पी नागरूप में आकर वहां से गायब हो गई-
नागराज की विष फुंकार से, जहरीले हो गए वातावरण से लोग अपनी जान बचाने के लिए दूर भाग रहे थे-
लेकिन एक अपनी जान पर खेलने के लिए तैयार हो रहा था-
तू यहां पर आते समय जो सर्जिकल टेप और कैंची लेकर आया था, वह मुझे जल्दी दे! जल्दी!

अगर तू देखता जा!

कुणाल ने कैंची से, अपनी जैकेट में दो छेद करके...

...उसको अपने सिर पर इस तरह डाल दिया कि वे दोनों छेद दोनों आँखों पर आ जाएँ–

और फिर अपनी आँखों पर धूप का चश्मा चढ़ाकर, कुणाल जाली के पार कूद गया–

ये जैकेट मुझे कुछ पलों तक ही विष फुंकार के घातक असर से बचाए रखेगी। मुझे उन्हीं पलों में अपना काम कर लेना होगा...

वह जांबाज लड़का बिजली की फुर्ती से नागराज की तरफ लपका–

...और उसने सर्जिकल टेप की कई परतों को नागराज के मुँह के ऊपर कस दिया–

विष फुंकार का निकलना बन्द हो गया–

मेरी सबसे बड़ी कमजोरी मेरा अपना शरीर है डॉक्टर। अभी-अभी आपने खुद देखा कि किस तरह एक आदमी मुझे काटकर भाग गया और फिर मेरी विष फुंकार अनियंत्रित हो गई —
...और यह सिर्फ इसलिए है, क्योंकि मुझे अपने ही शरीर के बारे में कुछ नहीं पता।...
—जैसे कि मैं दीवारों पर कैसे चढ़ लेता हूं। मेरे शरीर से सांप कहां से निकलते हैं? ये विष फुंकार कैसे निकलती है— और...
हमारे 'रिसर्च सेंटर' में तुम्हारे चेक-अप के लिए पूरी सुविधाएं उपलब्ध हैं। मैं चेक-अप के बाद ही तुम्हारे सवालों के जवाब दे पाऊंगा।...
अरे... इस चक्कर में तो मैं भूल ही गया था, विसर्पी कहां चली गई?
विसर्पी? यह कौन है?
विसर्पी पास में ही थी—
लेकिन ये चेक-अप क्या होगा।

और फिर—
तुम्हारे शरीर का इस '...' मशीन पे परीक्षण करने के लिए तुम्हारे शरीर को स्ट्रेचर से बांधना आवश्यक है, नागराज...
... क्योंकि ये मशीन, शरीर की एक ही अवस्था में एक के बाद कई फोटोग्राफ लेकर उनका मिलान करती है...
— और उसके बाद
कुछ बातें तो इन रीडिंगों की पूरी चेकिंग के बाद ही पक्की तौर पर बताई जा सकती हैं। लेकिन कुछ बातें मैं तुमको अभी ही बता सकता हूं।
कौन सी बातें?
तुम 'मेडिकल विज्ञान' के नजरिए से एक आश्चर्यजनक व्यक्ति हो
वैसे तो तुम्हारे शरीर
लेकिन तुम्हारा रक्त
से काफी कुछ

ये देखो! ये 'इलेक्ट्रॉनिक माइक्रोस्कोप' द्वारा तुम्हारी रक्त-बूंद का एक आवर्धित यानी 'एनलार्ज्ड' फोटोग्राफ है...

... मानव रक्त में मुख्यतः दो प्रकार के रक्त कण होते हैं। लाल रक्त कण एवं श्वेत रक्त कण! ये श्वेत रक्त कण मानव शरीर का बाहरी कीटाणुओं के हमले से बचाव करते हैं। लेकिन तुम्हारे रक्त में इन श्वेत रक्त कणों के स्थान पर सूक्ष्म सर्प तैर रहे हैं!
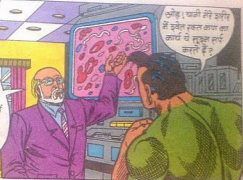
ओह! यानी मेरे शरीर में श्वेत रक्त कण का कार्य ये सूक्ष्म सर्प करते हैं?

हां, नागराज! और ये देखो! लाल रक्त के साथ-साथ ये नीले बिन्दु देख रहे हो? ... एक तीव्र मारक विष है। ये तुम्हारे खून ... साथ-साथ तुम्हारे शरीर में तैरता रहता ...। ये सूक्ष्म सर्प इसी तीव्र विष में जिन्दा रहते हैं।

यही सर्प जब तुम्हारे शरीर से बाहर ...कर वायु संपर्क में आते हैं तो इनका शरीर ...ड़ा हो जाता है। और तुम्हारे शरीर को छूते ... ये वापस सूक्ष्म रूप में आकर रोम छिद्रों के जरिए, तुम्हारे शरीर में वापस घुस जाते हैं।

...ने तुम्हारी जांच ...ने पर यही निष्कर्ष ...ला है, नागराज!

आप एकदम ठीक कह रहे हैं, डॉक्टर करुणाकरन। दरअसल मेरे सर्प मेरे शरीर के किसी भी हिस्से के संपर्क में आते ही वापस सूक्ष्म रूप में आ जाते हैं। और फिर शरीर पर रेंगते हुए, कलाई तक पहुंचकर, रोम छिद्रों से वापस अन्दर चले जाते हैं। ...
... शरीर से छूते ही, सूक्ष्म रूप में आने के कारण, देखने वालों को ऐसा भ्रम होता है कि सांप उसी स्थान से मेरे शरीर के अन्दर गए हैं, जहां पर उन्होंने स्पर्श किया था।
पूरी होने में एक- दो दिन का समय लग जाएगा...
परन्तु मेरे चेहरे से सांप नहीं निकलते हैं। मैं खुद भी नहीं जानता कि ऐसा क्यों है?
तुम्हारे इस सवाल का जवाब भी तुम्हारी पूरी जांच के बाद तुमको मिल जाएगा नागराज!
मुझे मेरे एक जासूस सर्प धामिन से मानसिक संकेत मिल रहे हैं।...
... कहीं पर कोई अपराध हो रहा है।
बाहर- सर्प रूप में विसर्पी, नागराज की ही प्रतीक्षा कर रही थी-
दरवाजा खुल रहा है, शायद नागराज ही बाहर आ रहा है... अब मुझे उससे अकेले में बात करने का मौका मिल जाएगा।
लेकिन विसर्पी की यह आस अधूरी ही रह गई-
क्योंकि नागराज के पास रुकने का वक्त नहीं था

ओफ़! अब मुझे फिर से नागराज की तलाश में निकलना पड़ेगा। लेकिन फिर मुझे यहां पर भी वापस आना है... यह देखने के लिए कि नागराज की जांच आखिरकार क्यों हो रही है?
सर्पी
गराज की तलाश में निकल रही थी–
किन उस 'गुंडे' को चाकू हटाने
समय ही नहीं मिला–
तड़ाक
आऊ!
मैडम ने ये पहले नहीं बताया था... कि जबड़ा भी तुड़वाना पड़ेगा।
हां, नागराज! और
ह 'खलनायिका...
?
–मैं हूं।

बताती हूं। पहले इन रूफदरों को विदा कर लूं।
नागराज के वार के लिए मैं आपसे माफी मांगती हूं पाल कुमार जी। अब आप लोग जाइए और मुझसे ऑफिस में मिलिएगा।
ओ० के० मैडम।
उन दोनों अभिनेताओं के जाने के बाद–
ये क्या हरकत है, भारती? जानती हो, मैं कितनी महत्त्वपूर्ण बातचीत को बीच में ही छोड़कर आया हूं?
तुम कल रात को अपने बंगले पर नहीं आए। मैं तुम्हें कुछ जरूरी किस्सा कहने वहां पर गई ज्यादा रात हो गई वहीं पर रुक गई
तो क्या हुआ?
जो कुछ हुआ, वही बताने के लिए मैंने तुमको यहां पर इस तरह बुलाया है। क्योंकि तुमसे संपर्क कर पाने का मेरे पास यही एक तरीका था।
मैं जानती थी कि देर-सवेर तुम्हारा कोई न कोई जासूस सर्प, इस अपराध को देखकर इसकी खबर तुम तक पहुंचा देगा।
तुम मुझसे 'स्नेक पार्क' में संपर्क कर सकती थी।
मैं समझी कि तुम वहां से निकल चुके होगे। वहां तो तुमको सिर्फ उद्घाटन करने ही जाना था न? उसमें कितना समय लगता है?
मैं वहीं पर था। अब बताओ, क्या बात हुई कल रात को?
भारती ने जो कुछ बताया, उससे नागराज की आंखें फटती चली गईं–
ओह! यानी विसर्पी मेरे घर पर भी आई थी। और उसने मुझे जान से मारने की धमकी दी?
ये विसर्पी आखिर है कौन?
फिर कभी बताऊंगा।
अभी तो मुझे यह जानने जाना है कि वह यहां पर क्यों आई है?

सवाल यह है कि विसर्पी को कैसे पता चला कि मैं महानगर में रहता हूं, और यह भी कि कहां रहता हूं?
इस सवाल का जवाब यहां पर था- नागद्वीप में-
इसको अब तक होश नहीं आया, राजवैद्य जी?
नहीं, महात्मा कालदूत! इसको थोड़ा समय और लगेगा!...
... विषंधर का वार झेलना, और उसके बाद काफी समय तक समुद्र में रहना, मामूली बात नहीं है।
ह हमको सिर्फ विषंधर के नागराज को रने के लिए किए गए यज्ञ के बारे में, और हानगर नामक स्थान का एक पता बताने साथ ही होश खो बैठा। अपना नाम तक हीं बता पाया, और न ही यह बता पाया कि हां तक क्यों आया था?
यह तो सिर्फ किस्मत की ही बात थी कि यह लहरों में बहता नाग-द्वीप की तरफ ही आ गया। वर्ना न तो ये बचता, और न ही हमको विषंधर के षड्यंत्र के बारे में पता चलता!...
... वैसे यह समझ में नहीं आया कि विषंधर, नागराज की जान के पीछे क्यों पड़ा है? नागराज तो शायद विषंधर से पहले कभी मिला तक नहीं था।
खैर! कुमारी विसर्पी का कुछ पता चला या नहीं, राजवैद्य जी?
नहीं, महात्मन! कुमारी विसर्पी नागद्वीप में नहीं हैं।

ओफ़! ऐसा पहली बार हुआ है कि कुमारी विसर्पी किसी को बिना कुछ बताए नागद्वीप से बाहर गई हों।
आखिरी बार तो मैंने उसको तभी देखा था, जब यह वृद्ध हम सबको विषंधर के बारे में बता रहा था।
हमारी भी विसर्पी से वही आखिरी मुलाकात है। लेकिन कल शिवरात्रि है।...
...नागद्वीप की परंपरा के अनुसार पूजा की शुरुआत विसर्पी को ही करनी है।...
...और अगर वह कल तक नहीं लौटी, तो पूजा में विघ्न पड़ सकता है।
अब मुझे ही अपनी योग शक्ति से विसर्पी तलाश करनी पड़ेगी
और उसको शिवरात्रि की पूजा से पहले-पहले, नागद्वीप पर वापस लाना होगा...
शिवरात्रि- सर्पों से संबंधित इस महान पर्व का आभास सभी को था-
कल शिवरात्रि है। और शिवरात्रि की रात को, नागराज के शरीर के सारे सर्प बाहर निकलकर शिव-आराधना करते हैं।
नागराज को पकड़कर उसकी 'विष ग्रंथि' निकालने का इससे सुनहरा अवसर दुबारा जल्दी नहीं मिलेगा।...
...क्योंकि सांपों के शरीर से निकल जाने के बाद नागराज में एक आम आदमी जितनी शक्ति ही रह जायगी। तुम तुरन्त नागराज के पीछे लग जाओ।
महानगर में नागराज की यह पहली शि
थी-
मैंने बहुत घूम-घाम कर महानगर के जंगलों में बने इस वीरान शिव मंदिर अपने शिवरात्रि पूजन के लिए चुना है मेरे अनोखे शिव पूजन के कारण कि कोई खतरा न पहुंचे।

गराज की शिव-अर्चना, वास्तव में अनोखी भी थी, और खतरनाक भी-
मेरी सर्प शक्तियों! मेरे शरीर से बाहर निकलो और शिवलिंग को प्रणाम करो!
पल-एक
दृश्य
हो गया-
नागराज की कलाइयों से सैकड़ों, हजारों सर्पों की बाढ़ सी निकलकर...
...शिवलिंग से लिपट गई-
देखते ही देखते, शिवलिंग का आकार, कई गुना बढ़ गया-
नागराज भी शिव-आराधना में लीन हो गया-
न्तु उसकी यह आराधना ज्यादा देर तक नहीं चल सकी-
फिस्स
ओफ़! यह महक कैसी है? । किसने नागराज की पूजा भंग करने की जुर्रत की है?...

मैंने !...

र से सारे सर्प निकल जाने के कारण, राज कमजोरी तो जरूर महसूस रहा था...
...लेकिन इससे उसके दृढ़ संकल्प में कोई कमी नहीं आई थी--
मैं यह तो नहीं जानता कि तू मेरी विषग्रंथि क्यों चाहता है? लेकिन मैं इतना जरूर जानता हूं कि तेरा संबंध उस 'केंचु सर्प' से जरूर है।...
...इतनी जल्दी-जल्दी दो दुर्लभ सर्पों का मुझ पर हमला करना संयोग नहीं हो सकता...
तड़ाक
कन शायद तुम यह नहीं समझ ही, कि जिस रास्ते से सर्प मेरे शरीर र निकले हैं, उस रास्ते से अन्दर भी आ सकते हैं।...
...आओ मेरी सर्प शक्तियो! वापस मेरे शरीर में प्रवेश करो।
वह इसलिए नागराज, क्योंकि मैंने तेरे शरीर पर एक ऐसे रासायनिक द्रव का स्प्रे कर दिया है, जिसकी गंध से सर्प तेरे पास तक नहीं फटक सकते।...
आ
...मैंने मौका भी सही चुना है न!

और किसी को भी ऐसे ही मौके की तलाश थी–
यहां तक पहुंचने में थोड़ी मेहनत तो करनी पड़ी। लेकिन मेरी किस्मत ने फिर मेरा साथ दिया...
...शहर में घूमते एक सर्प को मैंने पहचान लिया था कि वह नागराज के शरीर में वास करने वाला सर्प है...
...क्योंकि उसके शरीर में भी नागराज की ही गंध आ रही थी। मुझे मालूम था कि इन सर्पों से नागराज का मानसिक संपर्क रहता है...
ही उसने मानसिक
मुझे नागराज का पता
नागराज इस जंगल में स्थित उस वीरान शिव मन्दिर में आया है...
...अब मुझे उससे अकेले में मिलने का मौका मिल सकेगा!
विसर्पी का ख्याल गलत था–
नागराज अकेला नहीं था–
आह! मुझे जल्दी ही इससे निबटने का कोई रास्ता सोचना पड़ेगा। क्योंकि एक तो शरीर में से सर्पों के निकल जाने से मेरी शक्ति वैसे ही क्षीण हो गई है...
धाड़
...और दूसरे मेरे शरीर से बाहर निकलते वक्त उसने मेरी कमजोरी को और बढ़ा दिया है।

विष फुंकार का प्रयोग करके देखता हूं। शायद उससे बात बन जाए।
आह! तेरी फुंकार का मुझ पर कोई असर नहीं होगा नागराज! ...
... क्योंकि मेरी नाक पर 'प्रतिरोधक मॉस्क' चढ़ा हुआ है...
फूऊऊऊ
विष फुंकार ने कंटक काया पर कोई जान लेवा असर तो नहीं किया था...
किन उसको थोड़ा सा लित जरूर कर दिया था-
और नागराज के लिए इतना मौका काफी था-
कंटक काया को अगला वार कर पाने का मौका न देने के लिए-
हह!
क्का था कि नागराज, कंटक काया को बेहोश करने के बाद ही अपने वारों को रोकता-
उसके वारों को एक आवाज न रोक देती-
राज!
नागराज अपनी बात पूरी नहीं कर पाया-
धम
विसर्पी! तुम फिर...?
नागराज!

इससे पहले कि विसर्पी, नागराज की तरफ कदम बढ़ा पाती, उसके मस्तिष्क में एक आवाज गूंज उठी–
विसर्पी! तुम महानगर में क्या कर रही हो?
यह तो महात्मा कालदूत का संदेश है!
उनसे मानसिक संपर्क द्वारा बात करने के लिए मुझे भी अपने मस्तिष्क को केन्द्रित करना पड़ेगा।...
...और उसके लिए इन लड़ाई-झगड़े
से दूर शान्त वातावरण
होगा।
विसर्पी वहां से कब चली गई...
...यह देखने की फुर्सत नागराज के पास नहीं थी–
धड़ाक
आह
अब मैं तेरे शरी
पहले दो हिस्से
चीरूंगा...
अब तेरे बदन में सिर्फ एक नवजात शिशु जितनी शक्ति ही बची होगी नागराज!
...और उसके बा
अन्दर से विषग्रंथि को
कर ले जाऊंगा!
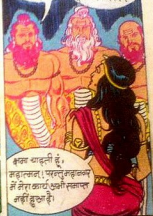
कंटककाया के हाथ,
राज का शरीर चीरने को
वाले हो रहे थे-
और दूसरी तरफ विसर्पी, कालदूत से तर्क करने में व्यस्त थी-
विसर्पी, तुम तुरन्त वापस आ जाओ...
...हम शिवरात्रि की पूजा के लिए तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं।
क्षमा चाहती हूं, महात्मन! परन्तु महानगर में मेरा कार्य अभी समाप्त नहीं हुआ है।
विसर्पी?
यह बताने में बहुत समय लग जाएगा महात्मन! और अभी मुझे जल्दी वापस जाना है...
हम तुम्हारे उत्तर से सन्तुष्ट नहीं हैं कुमारी विसर्पी! तुम्हारे सामने दो ही विकल्प हैं!...
...या तो तुम स्वयं वापस आ जाओ, या मैं किसी को तुमको जबरदस्ती ले आने के लिए भेजता हूं।
इधर विसर्पी और कालदूत में वाद-विवाद चल रहा था...

और उधर- नागराज में अविश्वसनीय रूप से आशा का संचार हो रहा था-
अरे! यह क्या हो रहा है? मुझे अपने कमजोर हो रहे शरीर में एक नई शक्ति और स्फूर्ति का संचार होता महसूस हो रहा है।
तड़ाक
लेकिन कैसे?
खैर! ये मैं बाद में सोचूंगा। फिलहाल तो मुझे इस मौके का फायदा उठाना चाहिए...
...इस कंटककाया की पीट कर इससे इस षड्यंत्र का रहस्य जानने के लिए।
कंटककाया, नागराज में हुए इस आश्चर्यजनक बदलाव के सदमे से उबर नहीं पाया-
और नागराज ने बाजी पलट दी-
बता!
किसने भेजा है तुझे!
मेरी 'विषग्रंथि' किसके लिए ले जाने वाला था तू? बोल!
यह तू मुझसे कभी नहीं जान पाएगा नागराज? कभी नहीं!

कमीनहीं!
धाड़!
आह!
कांटेदार नकाब की अप्रत्याशित टक्कर ने, नागराज के चेहरे को बुरी तरह से लहूलुहान कर दिया-
और नागराज का शरीर कंटककाया के शिकंजे में जकड़ गया-
अंह!
नागराज ने अपने बचाव के लिए कंटककाया को अपनी पीठ के ऊपर से हवा में उछाल दिया-
और यही कंटककाया की मौत का कारण बन गया-
क्योंकि हवा में उड़ता उसका शरीर सीधे त्रिशूल पर जा गिरा-
ओह! शायद भोले-नाथ शंकर देव ने इसको पूजा भंग करने का दण्ड इस तरह से दिया है।

अब ये सर्प भी मेरे शरीर में प्रवेश कर रहे हैं। शायद अब तक इसके द्वारा मेरे शरीर पर छिड़के गए रसायन की महक का असर खत्म हो गया है...
... लेकिन मुझ पर हमला होते देखकर भी मेरी सर्प-सेना ने इसकी काया पर हमला क्यों नहीं किया? जरूर इसने अपने शरीर पर भी इसी रसायन का स्प्रे कर रखा होगा...
... अब अपनी अंधी मूर्ति पूजा को दुबारा शुरू करने का कोई लाभ नहीं है।
अब तक मेरी जांच रिपोर्ट तैयार हो गई होगी। मैं स्नेक पार्क जाकर उनसे आकर जांच रिपोर्ट पर बात-चीत कर सकता हूं।
अगर नागराज कुछ और वहां पर रुक
महात्मा कालदूत जरूर किसी न किसी को मुझे यहां से ले जाने के लिए भेजेंगे।
... और ... अरे! नागराज कहां चला गया? ओफ्! अब मुझे फिर से उसकी तलाश करनी होगी।...
... लेकिन उसकी तलाश करने से पहले मैं यह जानना चाहूंगी कि नागराज की जांच का क्या परिणाम निकला। और उसके लिए मुझे 'स्नेक पार्क' जाना होगा।...
... शायद वहां से नागराज का पता भी मिल जाए।
मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है। मुझे तुरन्त नागराज से मिलना होगा...
विसर्पी यह नहीं जानती थी कि स्नेक पार्क में उसकी मुलाकात नागराज के अलावा किसी और से भी होने वाली थी-

क्योंकि उसी वक्त-महानगर के अंजान हिस्से में-

कंटककाया को अब से आधे घंटे पहले, यहां पर पहुंच जाना चाहिए था।

उसके अब तक यहां न पहुंच पाने के दो ही कारण हो सकते हैं। या तो वह मारा गया है। और या नागराज ने उसे बंदी बना लिया है।

और दोनों ही परिस्थितियों में वह हमारे किसी काम का नहीं रहा।

अब नागराज पर, उसका जहर पाने के लिए, फिर से हमला करने से पहले उसके जहर की तलाश एक और स्थान पर कर ली जाए। और वह स्थान है...

...स्नेक पार्क!...

...शायद नागराज ने बाकी सर्पों की तरह अपना विष भी वहां पर विषनाशक दवा बनाने के लिए रख छोड़ा हो।...

नागराज ने अब तक अपना तीव्र जहर दान नहीं किया था। क्योंकि अब तक इसका मौका ही नहीं मिल पाया था-

तुम्हारी जांच काफी हद तक पूरी हो गई है, नागराज। सिर्फ एक-दो चीजों को कंफर्म करने के लिए तुम्हारा फिर से सी॰टी॰ स्कैन करना पड़ेगा।

तो आपको क्या लगा मेरी शरीर-रचना के बारे में?

सबसे पहले तुम्हारे उस सवाल का जवाब कि तुम्हारे चेहरे के रोम छिद्रों से सर्प क्यों नहीं निकलते हैं... दरअसल तुम्हारे रक्त में मौजूद सूक्ष्म सर्प, तुम्हारे धड़ में यानी गर्दन के नीचे तक के हिस्से में ही रहते हैं।

तुम्हारे चेहरे की रक्त नलिकाओं में सर्प मौजूद हैं ही नहीं। इसलिए चेहरे से इनके बाहर निकलने का सवाल ही पैदा नहीं होता।

ओह! लेकिन अभी-अभी मेरी मुठभेड़ एक सर्पमानव से हुई थी। लेकिन उस मुठभेड़ के दौरान मेरे साथ एक आश्चर्यजनक वाकया घट गया...

कैसा वाकया नागराज

ओह! मैं समझ गया। दरअसल ऐसा इ हुआ, क्योंकि तुम्हारे शरीर में वास करने सूक्ष्म सर्पों की एक आश्चर्यजनक श वे तुम्हारे ज़हरीले रक्त में अपने आप हो जाते हैं। यानी एक से दो बन जाते वे दो से चार, चार से आठ और ऐसे ही बढ़ते जाते हैं।

नागराज ने डॉक्टर करूनाकरन को कंटककाया से हुई अपनी मुठभेड़ के दौरान, सर्पों के निकल जाने के कारण हो गई कमजोरी और फिर आश्चर्यजनक रूप से शक्ति का संचार होने वाली घटना बता दी-

लेकिन ऐसा तभी होता है, जब इन की संख्या, एक खास मात्रा में कम हो ज जब तुम्हारे रक्त में इनकी संख्या उस उससे थोड़ी ज्यादा हो जाती है, तब ये द्विगुणित होना बन्द कर देते हैं।

तुम्हारी कंटककाया से हुई मुठभेड़ के दौरान ज़रूर एक-दो सूक्ष्मसर्प तुम्हारे शरीर में बचे रह गए होंगे। वे लड़ाई के दौरान, तुम्हारे रक्त में द्विगुणित होते रहे। और अब इनकी संख्या एक खास स्तर तक पहुंच गई तो तुमको फिर से अपने शरीर में शक्ति का संचार होता महसूस होने लगा...

...और तुम्हारे शरीर पर जो गोलियों, भालों और चाकू का असर नहीं होता वह भी इन सूक्ष्म सर्पों के कारण ही है...

अब दो समस्यायें हमारे सामने हैं। एक तुम्हारी विष फुंकार और दूसरी तुम्हारे शरीर में दौड़ता जहर, जिसकी वजह से अगर कोई तुमको या तुम किसी और को काट लो, तो उसकी मौत हो जाती है।...
...सबसे पहले मैं विष फुंकार की समस्या को तुमको बताता हूं।
देखो! तुम्हारी विष फुंकार वाली ग्रंथि तुम्हारी कनपटी के ठीक नीचे स्थित है। और इसका संबंध, इस नली द्वारा तुम्हारे गले से भी है। जब तुम विष फुंकार को निकालना चाहते हो, तो तुम्हारे गले से वायु-प्रवाह निकलता है...
और इस ग्रंथि का विष, इस नली तुम्हारे द्वारा छोड़ी गई फुंकार मिश्रित हो जाता है...
... ठीक उसी तरह, जिस तरह कीटनाशक स्प्रे-पंप काम करते हैं।
अब समस्या है तुम्हारे शरीर में दौड़ते जहर को नियंत्रित करने की!...
...इसके लिए मुझे फिर से तुम्हारा सी॰ टी॰ स्केन करना पड़ेगा!
केंचुसर्प की दुम का वार सीधा इसी पर पड़ा था, जिससे यह ग्रंथि थोड़ी कर अनियंत्रित हो गई थी।...
... मैं एक छोटा सा ऑप्रेशन करके इस ग्रंथि के ऊपर एक फाइबर ग्लास का कवर फिट कर दूंगा, ताकि ऐसी दुर्घटना दुबारा न घटे!
तो देर कैसी? अभी कर लीजिए!
चलिए!
वक्त- स्नेक पार्क के के ठीक अन्दर -
वह नागिन बड़ी चतुराई से छिपती हुई, स्नेक पार्क की इमारत के अंदर दाखिल हो रही थी-

लेकिन सतर्क पहरेदारों की नज़र से वह नागिन बच नहीं सकी–
अरे! यह नागिन अपने पिंजरे से बाहर कैसे आ गई?...
...आऽऽऽह!
लेकिन दूसरा पहरेदार, ऐसी किसी भी परिस्थिति के लिए तैयार था–
अंह!
ओह! इसने तो मुझे भी सुंदरी लकड़ी से जकड़ लिया है। मैं इसको अपना असली रूप दिखाना तो नहीं चाहती थी...
...उस पहरेदार के तो होश ही उड़ गए। और इससे पहले कि वह होश को संभाल पाता...
...विसर्पी ने उसके होशो-हवास को पूरी तरह से उड़ा दिया–

विसर्पी यह नहीं जानती थी कि नागराज भी पास के ही एक कमरे में मौजूद था–
बस, नागराज! सिर्फ दस मिनटों में तुम्हारी जांच पूरी हो जाएगी!
यानी दस मिनटों तक मुझे ऐसे ही बंधे पड़ा रहना होगा?
अरे! हम तो बड़ी तैयारी से आए थे। लेकिन यहां तो पहरेदार पहले से ही तड़प रहे हैं।
यानी कोई और हमसे पहले ही यहां पर पहुंच चुका है!
वह 'खतरा' इस वक्त नागराज की फाइल पढ़ने में व्यस्त था–
ओह! कई शब्द तो मुझे समझ में नहीं आ रहे हैं। लेकिन फिर भी नागराज की आश्चर्यजनक शक्तियों का इन कागजात में पूरा जिक्र है–
...ये जानकारियां पढ़ने के बाद तो कोई भी नागराज को खत्म करने का रास्ता बड़े
मुझे कुछ खतरे का आभास हो रहा है।...
...बहुत संभलकर अन्दर घुसना!

उसी वक्त
पैरों की आहटें? तीन-चार लोग एक साथ ही इधर आ रहे हैं। मुझे छुप जाना चाहिए।...
...क्योंकि ये लोग जरूर सिक्योरिटी गार्ड होंगे!
विसर्पी का ख्याल गलत था–
आने वाले लोग, सिक्योरिटी गार्ड नहीं थे
प्रोफेसर! इस कमरे का दरवाजा खुला हुआ है!
लेकिन यहां पर तो कोई नहीं...
...अरे!
इस फाइल पर तो नागराज का नाम लिखा है। क्या है इसके अन्दर?
उस रहस्यमय शख्स ने फाइल के दस्तावेजों को पलटना शुरू किया, और उसकी आंखों की चमक बढ़ती ही चली गई–
वाह! वाह! वाह!
ये फाइल तो हीरे की खान है। इसमें तो नागराज से संबंधित ऐसी-ऐसी जानकारियां हैं, जिनका पता मुझे अभी तक नहीं था...
ओह! यह तो वही है, जिसने मुझे पहचान लिया था... इसके बोलने का अन्दाज काफी खतरनाक है। यह जानने के लिए पर नजर रखनी होगी आखिर ये नागराज से चाहता क्या है?

सी·टी· रूम में–
मशीन ने तुम्हारी स्कैनिंग तो कर ली है नागराज! लेकिन इस नई स्कैनिंग को तुम्हारी पुरानी स्कैनिंग से मैच करना पड़ेगा।...
...तभी टेस्ट के सही नतीजे सामने आ पाएंगे। मैं अभी रिकार्ड रूम से तुम्हारी 'मेडिकल फाइल' लेकर आता हूं।
करूणाकरन ने कमरे से बाहर जाने को एक कदम बाहर बढ़ाया–
आ गिरे–
कहीं जाने की जरूरत नहीं है, डॉक्टर। फाइल खुद तेरे पास आ गई है।
तड़
वाह वा! इसे कहते हैं किस्मत! हम तो नागराज का जहर लेने आए थे।...
...लेकिन यहां पर तो पूरा का पूरा नागराज ही मिल गया। और वह भी बंधा हुआ!
क्या

आज तूने मेरा दिल तोड़ दिया नागराज! मैंने तुझे पाल-पोस कर इतना बड़ा किया... ...नागराज बना दिया...
...और तू आज मुझे पहचान तक नहीं रहा है।
नागमणि!
अब देखो! मैंने एक आदमी को सम्मोहित करके तेरे पास तेरा खून पीने को भेजा। और फिर उसकी गली लाश को उठा लाने के लिए केंचु सर्प को भेजा, ताकि मैं उस गली लाश में से तेरा जहर अलग कर सकूं...
...लेकिन तूने केंचु सर्प को खत्म करके मेरी स्कीम को टांय-टांय फिस्स कर दिया।
...लेकिन आज इस फाइल को पढ़ कर मुझे पता चला कि मेरी किस्मत तो बहुत अच्छी थी। इसके अनुसार तेरे मरते ही तेरी विष शक्ति का सारा जहर बेकार हो जाएगा!

यानी वह सब तुम्हारा रचा हुआ था?
हां, नागराज! और यहां पर तो मैं यह सोचकर आया था कि शायद यहां पर तेरा जहर मिल जाए। लेकिन यहां पर तो मेरी लॉटरी लगी हुई है।
अच्छा! लेकिन तुम मेरा जहर लेने के लिए इतने बेताब क्यों हो, नागमणि?
मुझे चुपचाप अपना जहर दे दे नागराज!
विषफुंकार और सम्मोहन शक्ति, नागराज? लेकिन अगर तूने उनका इस्तेमाल किया...
तो मैं इस डॉक्टर भेजा तुझे गिफ्ट में दे दूंगा!
अब जल्दी से अपना जहर मुझे दे दे! वर्ना तेरी जिद के कारण ये गरीब डॉक्टर मारा जाएगा।
ओह! तो ये चक्कर है!
अब मुझे बीच में पड़ना ही...
...ओह!
हिलियो मत छोरी! नहीं तो तू जानती ही है कि क्या हो सकता है!
क्लिक

अन्दर - नागराज के दिमाग में एक ही सवाल घूमे जा रहा था -
अगर नागमणि सच कह रहा है तो विसर्पी इस पूरे मामले में कहां पर फिट होती है। कहीं ऐसा तो नहीं कि विषंधर की तरह प्रोफेसर नागमणि भी विसर्पी का ही आदमी बन गया हो ? लेकिन अगर ऐसा है तो...
...विसर्पी यहां पर भी जरूर आएगी...
...विसर्पी!
नागराज को विसर्पी की सिर्फ एक झलक दिखाई दी -
और उसके बाद दो तेज आवाजें आईं। किसी के जमीन पर गिरने की, और फिर चीखने की -
प्रोफेसर!
घम्म
यह तो
आवाज है
देखें, क्या
है?
प्रोफेसर! मुझे बचा लो! उस इच्छाधारी नागिन ने मुझे डस लिया है।
इच्छाधारी नागिन!...
...यह जरूर वही
मुझे इस पार्क के
पर यहां दिखी थी।

नागमणि ने अपनी जेब से एक कांच की शीशी को निकालकर हवा में उछाल दिया-
इस बार ये मेरे चंगुल से बचकर कहीं नहीं जा पाएगी।
और विसर्पी को वहीं रुक जाना पड़ा-
ओह! यह कैसी महक है? मुझे मितली और चक्कर आ रहे हैं। मैं एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा पा रही हूं।
इस शीशी में वही दवा है, जिसका सेवन मैंने कंटककाया को दिया था। अब आओ, पकड़ लो इसको!
लेकिन प्रोफेसर!
नागमणि और उसके आदमी बेबस विसर्पी की तरफ बढ़े--
अरे नागराज कहां जाएगा?
वह तो बंधा हुआ है।
... लेकिन बीच में ही औंधे मुंह जमीन पर आ गिरे-
ये... ये क्या? सांप? ये तो नागराज के सर्प लगते हैं।
यानी नागराज आजाद हो गया है! पर कैसे? डॉक्टर होश में आ गया क्या?

डॉक्टर अब तक पूरी तरह संभल नहीं पा रहे हैं नागराज! परन्तु सोचने का कष्ट क्यों उठाते हो। मैं खुद ही तुमको बता देता हूं।...
...दरअसल मैं यह सोच रहा था कि जहर तो मेरे पूरे शरीर में है। तुम चाहते तो मेरे शरीर से खून निकालकर उसमें से जहर को अलग कर लेते। लेकिन तुमने ऐसा क्यों नहीं किया? जवाब ढूंढने में मुझे ज्यादा वक्त नहीं लगा।
तुम यह जानते थे कि मेरे बदन से रक्त निकलते ही, मेरे रक्त में दौड़ रहे सर्प भी आजाद हो जाएंगे...
...यह ख्याल दिमाग में आते ही मैंने अपने दांत, अपने कंधे पर ही गड़ा दिए। खून निकला, साथ में सर्प भी निकले।
और मेरे मानसिक निर्देशों पर काम करते हुए, उन्होंने मुझे आजाद कर दिया।...
...और अब मुझे इस लड़की से कुछ सवाल-जवाब करने हैं। तब तक तुम लोग जरा सुस्ता लो।
नागराज बदहवास सी पड़ी विसर्पी को सिर्फ छू ही पाया था...

...और मेरे पास वक्त कम है।
आज तुम ऐसा नहीं कर पाओगे नागराज!...

ये इतना शक्तिशाली कैसे हो गया? अब मुझे इस पर अपनी तीव्र विषफुंकार का वार करना होगा।
फ़ऊऊ
मुझे परास्त करने की बेकार कोशिश मत करो, नागराज! आज मैं हार नहीं सकता।
हूश
ओह! यह मेरी विष फुंकार की शक्ति की तरह पी गया। पर कैसे?
नागराज यह नहीं जानता था कि की महात्मा ने से युक्त करके भेजा था–
ताकि उसे कोई रोक न सके–
ओह! इसकी मणि से कोई किरण निकलकर मुझे शिथिल कर रही है। मैं अपने-आप को संभाल नहीं पा रहा हूं!

नागराज के संभलने से पहले ही, कालकूट विसर्पी को लेकर अदृश्य हो गया–
ओह! विसर्पी का रहस्य रहस्य ही रह गया। लेकिन नागमणि द्वारा उसको पकड़ने की कोशिश से यह तो स्पष्ट हो गया है कि विसर्पी नागमणि के साथ नहीं है। इस बात की पुष्टि तो नागमणि से ही हो–
... अरे! नागमणि और उसके आदमी कहां गए?
खैर! नागमणि को तो मैं ढूंढ ही लूंगा। परन्तु विसर्पी से संबंधित प्रश्नों के उत्तर कहां से मिलेंगे? समझ में नहीं आता कि वह दुश्मन है या दोस्त? वैसे उसकी हरकतें दुश्मन जैसी ज्यादा थीं।...
... अगर मेरा नागद्वीप पर जाना निषिद्ध न होता, तो मैं स्वयं जाकर विसर्पी से पूछता। परन्तु ऐसा होना असंभव है।...
...सवाल वहीं का वहीं है। विसर्पी यहां पर क्यों आई थी? और उसको मेरे महानगर के निवास-स्थान के बारे में कैसे पता था?
फर्श पर कांच की एक और टूटी शीशी और थोड़ा द्रव गिरा हुआ है। इस द्रव में वैसी ही महक आ रही है, जैसी कंटककाया के स्प्रे से आ रही थी–
... यानी नागमणि के पास ऐसा द्रव और भी होगा। और इसी का प्रयोग करके उसने अपने आदमियों और अपने-आपको सर्प बंधनों से आजाद करवा लिया होगा!

नागराज को नागद्वीप की प्रजा ने अवांछित व्यक्ति घोषित कर रखा है। और उसी व्यक्ति से नागद्वीप की राजकुमारी मिलने जाती है। यह प्रजा की भावनाओं का खुला उल्लंघन है। बोलो तुम महानगर क्यों गई थीं?
मैं तो विषंधर के षड्यंत्र से नागराज को बचाने और सावधान करने गई थी। और वह भी इसलिए क्योंकि मैं स्वप्न में भी नागराज को हानि पहुँचता नहीं देख सकती।...
... क्योंकि मैं मन ही मन में नागराज को अपना पति मान चुकी हूँ।...
क्षमा करें, महात्मा! मैं इस प्रश्न का उत्तर देने में असमर्थ हूँ।
खैर, यह समस्या कभी तो सुलझेगी।...
... मैं उस दिन के लिए इंतजार भी करूँगी और प्रार्थना भी।

समाप्त